International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5. 12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 2; March 2017; Page No. 71-72

ध्वनिकार के पूर्ववर्ती आचार्य : उद्‌भट

डॉ0 पूनम राय

प्रवक्ता, सेंट जॉन्स अकादमी, करछना, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश

साहित्य–शास्त्र में जितनी कृतियाँ उपलब्ध हैं उनमें भरतकृत नाट्यशास्त्र प्राचीनतम है। नाम्ना यद्यपि यह नाट्यशास्त्र सम्बन्धी विषयों का ही ग्रन्थ प्रतीत होता है, किन्तु यह विविध कलाओं का आकार ग्रन्थ है। इतिहास में इस ग्रन्थ को इतना महत्व प्राप्त हुआ कि इसकी महिमा के प्रकाश में सजातीय ग्रन्थों की खद्योतमाला ऐसी निष्प्रभ हो गई कि काल की गति उन्हें सर्वथा विस्मृति के गर्त में धकेल गयी।

मूल शब्दः साहित्य–शास्त्र, नाट्यशास्त्र, उद्‌भट।

प्रस्तावना

उद्‌भट के तिथि निर्णसय में अधिक कठिनाई नहीं है। इन्होंने भामह पर टीका लिखी है, जिनका समय सप्तम शताब्दी अथवा उसके कुछ पश्चात् है। अतः उद्‌भट का समय 750 ई0 से पूर्व नहीं माना जा सकता। ध्वन्यालोक (नवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध) ने अनेक स्थानों (पृ0 116, 131) पर उद्‌भट का आदरपूर्वक निर्देश किया है। अतः उनका समय 850 ई0 के पूर्व मानना होगा। काश्मीर की परम्परा में माना जाता है कि यह वही प्रसिद्ध उद्‌भट है जो जयापीड (779–813 ई0) का सभापति था।

इनका पूरा नाम भटोद्‌भट था। कल्हण की राजतरंगिणी में उनके विषय में अधोलिखित श्लोक आया है–

विद्वान दीनारलक्षेण प्रत्यंह कृतवेतनः।
भट्‌टोऽभूदृद्‌भटस्तस्य भूमिभूर्तुः सभापतिः।।

यदि इस परम्परा को स्वीकार किया जाय तो उद्‌भट का समय 800 ई0 मानना होगा। यदि इस परम्परा को स्वीकार नहीं किया जाता तो भी कोई अन्तर नहीं पड़ता, प्रत्येक स्थिति में उद्‌भट का समय 750–850 ई0 सिद्ध होता है।

महाराजा जयापीड का शासन काल सं0 836 से 870 वि0 तक माना गया है, अतः उद्‌भट का भी यही काल होना चाहिए। उद्‌भट अलंकारवादी आचार्य होते हुए भी रस के पृष्ठपेषक है। उद्‌भट एक ओर तो अलंकारमत के अनुयायी दिखाई पड़ते हैं। तो दूसरी ओर ये भरत के भी निकट हैं। इस प्रकार इनका व्यक्तित्व दूहरा दिखाई पड़ता है। इन्होंने भामह विवरण लिखकर भामह के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित की है तो दूसरी ओर भरत के नाट्यशास्त्र पर टीका लिखकर भरत के अनुयायी भी बने हैं। दोनों पुस्तकें अभी तक अनुपलब्ध है। अपने ग्रंथ काव्यालंकारसार–संग्रह में अलंकारों का ही प्रशस्ति गान करते हैं। इस प्रकार भरत एवं भामह दोनों से प्रभावित होने के कारण उनके विवेचन में यह प्रभाव लक्षित होता है।

इन्होंने भामह एवं दण्डी से अपेक्षाकृत विस्तृतरूप से रस का विवरण प्रस्तुत किया है दोनों आचार्यों ने केवल रसवत्, प्रेयस एवं ऊर्जस्वी अलंकारों का ही वर्णन किया था किन्तु उद्‌भट ने एक नवीन अलंकार समाहित की कल्पना की। उद्‌भट के अनुसार समाहित वहाँ होता है जहाँ भाव, रसाभास, भावाभास की शान्ति का ही उल्लेख हो किन्तु दूसरे रसों के अनुभाव आदि का वर्णन न हो।

रसाभावतदाभासवृत्तेः प्रशमबन्धनम्।
अन्यानुभाव निश्शून्यरूपं मत्तत् समाहितम्।।

रस के क्षेत्र में उन्होंने अत्यन्त महत्व की बात कही है। शान्त रस को नाटक में स्थान देकर इन्होंने पहले–पहल यह बतलाया कि शान्त–रस का भी नाटक में अनुभव किया जा सकता है – नव नाट्ये रसाः स्मृताः – इन्होंने दण्डी प्रभृति से कहीं अधिक रसवत् आदि अलंकारों का वर्णन किया है एवं रसों के अनुभव के लिए भाव का चित्रण स्पष्ट रूप से उपस्थित किया। उद्‌भट ने रसों के पाँच साधनों का निर्देश किया है–

रसवद्‌दर्शितस्पष्टश्रृंगारादिरसोदयम्।
स्वशब्दस्थादिसंचारिविभावाभिनयास्पदम्।।

स्वशब्द की व्याख्या करते हुए उद्‌भट के प्रसिद्ध टीकाकार ने कहा है – श्रृंगार आदि रसों, स्थायी भाव एवं संचारी भावों की स्वशब्द वाच्यता।

प्रेय का लक्षण निरूपण करते हुए उद्‌भट ने कहा है कि रीति आदि भावों को सूचित करने वाले अनुभावों द्वारा जिस काव्य की रचना हो वह प्रेय अलंकार युक्त काव्य है, अर्थात जब स्थायी भाव रसावस्था को न पहुँचे तो वहाँ प्रेयस्वत् अलंकार होगा। जिसे रसवादी आचार्यों ने भाव कहा है।

रत्यादिकानां भावानामनुभावादिसूचनैः।
यत्काव्यं वध्यते सदभिस्तत्प्रेयस्वदुदाहृतम्।।

इन्होंने ऊर्जस्वी अलंकार वहाँ माना है जहाँ काम, क्रोध आदि के कारण रस एवं भावों का अनुचित ढंग से वर्णन हो।

अनौचित्यप्रवृत्तानां कामक्रोधादिकरणात्।
भावानां च रसानां च वन्ध ऊर्जस्वि कथ्यते।।

यहाँ रसवादी आचार्यों एवं उद्‌भट में यही अन्तर है कि रसवादी अंगरूप रसाभास एवं भावाभास को ऊर्जस्वी अलंकार कहते हैं तो उद्‌भट अंगीभूत को।

इस प्रकार के विवेचन से यही पता चलता है कि उद्‌भट अलंकारमत के साथ ही साथ रसवाद के भी समर्थक थे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. काव्य मीमांसा, राजशेखर, चौखम्बा संस्कृत सीरीज, विद्याभवन, वाराणसी, 1964।

2. नाट्यशास्त्र, श्री बाबू लाल शुक्ल, शास्त्री चौखम्बा संस्कृत, सीरीज आफिस; वि0सं0 2029।
3. अभिनव भारती, अभिनवगुप्त, गायकवाड़ ओरियण्टल सीरीज, बड़ौदा; 1963।
4. रस–सिद्धान्त, डा0 नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली; तृतीय संस्करण; 1974।
5. रस–सिद्धान्त स्वरूप विश्लेषण, आनन्द प्रकाश दीक्षित, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली; 1972।
6. रस–गंगाधर, चिन्मयी माहेश्वरी, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर–4; 1974।
7. रस–गंगाधर, पण्डितराज जगन्नाथ, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी; 1987।
8. काव्य–दर्पण, विद्या वाचस्पति पंडित रामदहिन मिश्र, ग्रन्थमाला कार्यालय, पटना; 1973।
9. काव्यालंकार, भामह, बाल मनोरमा सीरीज, मद्रासा; 1956।
10. भारतीय साहित्य शास्त्र, पं0 बलदेव उपाध्याय, नन्द किशोर एण्ड सन्स, वाराणसी; 1963।
11. काव्य–दर्पण, विद्या वाचस्पति पंडित रामदहिन मिश्र, ग्रन्थमाला कार्यालय, पटना; 1973।
12. ध्वन्यालोक, आनन्दवर्धन, गौतम बुक डिपो, नई सड़क, दिल्ली; 1952।
13. काव्यालंकार (नमिसाधु टीका सहित), रूद्रट, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी; 1966।
14. काव्यालंकार, श्री रामदेव शुक्ल, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी; 1967।
15. श्रृंगाररस भावना और विश्लेषण, रमाशंकर जैतली, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर; 1972।
16. श्रीवाग्भटाचार्य विरचितः रसरत्न समुच्चयः, पं0 श्री धर्मानन्द शर्मणा, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, वाराणसी, पटना; 1962।